संपदि यस्य न हर्षो विपदि विषादो, रणे च भीरुत्वम्।

तं भुवनत्रय तिलकम् जनयति जननी सुतम् विरलम्।।4।।

शब्दार्थ :–संपदि :– संपति आने पर ;यस्य :– जिस को ;नः– नहीं ; हर्षो :– खुशी ;; विपदि :– विपति ;विषादोः– दुःख ;रणे :–युद्ध भूमि में ;भीरुत्वम् :– कायरता ;तं :– उस ;भुवनत्रय :– तीनों लोकों के तिलक स्वरूप ; जनयति :–जन्म देती ; जननी :– जन्म देने वाली ;सुतम् :– पुत्र को ; विरलम् :– विरली ही माता ।

प्रसंग प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से लीं गई हैं।यह पाठ अष्टम् सुभषितानि में से ली गई हैं। इस में कवि नें बताया है कि संपति आने पर ज्यादा खुशी एवं दुःख आने पर ज्यादा शोक नहीं करना चाहिए ।

सरलार्थ :– जो संपति आने पर बहुत खुशी नहीं मनाता और विपति आने पर बहुत दुःख नहीं मनाता ऐसे पुत्र को विरली ही माता जन्म देती है।

पुस्तक स्था तु या विद्या, पर हस्तगतम् यत धनम्

कार्य काले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद् धनम् ।।5।।

शब्दार्थ :–स्था :– में ; या :–जो ;पर :– दूसरे के ;हस्त :– हाथ में ; गतम् :– गया हुआ ; यत् :– जो ;धनम् :– धन है।

कार्य काले :–काम ; समुत्पन्नेः– आने पर ;न :–नहीं ; सा :– वह ; विद्या :–विद्या है ; तद् :– वह ; धनम् :– धन धन है।

प्रसंग :– यह लाइनें हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गईं है।यह सुभाषितानि अष्टम् पाठ में से ली गई। है। इस में कवि नें पाठ को याद करने के महत्व के बारे में बताया है।और धन को अपने पास रखने के बारे में बताया है।

सरलार्थ :– पुस्तकों में जो विद्या है, और दूसरे के हाथ में जो धन है , आप के लिए काम पड़ने पर ना वह विद्या, विद्या है और ना वह धन ,धन है। भाव यह है कि विद्या को कंठस्थ करना चाहिए और धन को अपने पास रखना चाहिए ।

सः जीवति गुणा यस्य,यस्य धर्मः सः जीवति ।

गुण धर्म विहीनस्य जीवितं निष्प्रयोजनम्।।6।।

शब्दार्थ :–सः :–वह ;जीवति :– जीता है ;यस्य :– जो ; गुणा :– गुणी है ; धर्म :–धर्म पर चलता है ;विहीनस्य :–बिना ;

निश्प्रयोजनम् :– बिना मतलब के ;

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक –8 में से ली गई हैं यह सुभाषितानि अष्टम् पाठ में से ली गईं है। इस में कवि ने बताया है कि मूर्ख को जीनें का कोई अधिकार नहीं है।अधर्मी को जीने का कोई अधिकार नहीं है।

सरलार्थ :– कवि कहता है कि जो गुणी है उसका जीना सफल है क्योंकि वह जब तक जीता है सम्मान से जीता है जो धर्म पर चलता है उसका जीना भी सफल माना गया है ।मूर्ख और अधर्म करने वाले का जीना व्यर्थ बताया गया है।

prepared by Seema Sanskrit Mistress